भ्रम का निराकरण

उत्तरदायी ज्योतिष की आवश्यकता

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

भारतीय ज्ञान-परम्परा में ज्योतिष को केवल भविष्य कथन की विधा नहीं, बल्कि मानव जीवन, प्रकृति, काल तथा ब्रह्माण्ड के मध्य विद्यमान सूक्ष्म सम्बन्धों को समझने वाली एक समग्र ज्ञान-व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है. वेदों ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है. नेत्र का कार्य केवल देखना नहीं, बल्कि सही दिशा दिखाना भी होता है. यदि नेत्र भ्रमित हो जाए तो समस्त शरीर मार्ग से विचलित हो जाता है; उसी प्रकार यदि ज्योतिष का मार्गदर्शक स्वयं अधूरे ज्ञान, लोभ, अहंकार अथवा प्रसिद्धि की लालसा से प्रेरित होकर समाज का मार्गदर्शन करने लगे तो उसके परिणाम केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सम्पूर्ण समाज, संस्कृति तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है. आज का सबसे बड़ा संकट ज्योतिष पर विज्ञान और अविज्ञान की बहस नहीं है, बल्कि स्वयं ज्योतिष के भीतर नैतिकता के क्षरण का संकट है.

ज्ञान का पतन तब नहीं होता जब उसके विरोधी उत्पन्न होते हैं, बल्कि तब होता है जब उसके स्वयं के प्रतिनिधि अपने दायित्वों को भूल जाते हैं. यही कारण है कि आज स्वघोषित ज्योतिषाचार्यों की बढ़ती संख्या, भय-आधारित भविष्यवाणियाँ, चमत्कारों के व्यापार, अप्रमाणित उपायों तथा डिजिटल माध्यमों पर फैलते भ्रम ने ज्योतिष की उस गरिमा को चुनौती दी है, जिसे भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्षों की साधना से स्थापित किया था.महर्षि पराशर, वराहमिहिर, मन्त्रेश्वर, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ दीक्षित तथा अन्य महान आचार्यों ने कहीं भी ज्योतिष को भय उत्पन्न करने का साधन नहीं माना. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में स्पष्ट संकेत मिलता है कि किसी भी फलादेश से पूर्व सम्पूर्ण जन्मकुण्डली, ग्रहबल, दशा, अन्तर्दशा, गोचर, दृष्टि, योग, नवांश तथा देश, काल और पात्र का सम्यक् परीक्षण आवश्यक है. इसका सीधा अर्थ यह है कि किसी एक ग्रह, एक दोष अथवा एक योग को आधार बनाकर जीवन के अंतिम निष्कर्ष सुना देना स्वयं शास्त्रीय परम्परा का उल्लंघन है. दुर्भाग्य से वर्तमान समय में अनेक तथाकथित ज्योतिषी सम्पूर्ण कुण्डली का अध्ययन किए बिना केवल कालसर्प दोष, मंगल दोष, पितृदोष, शनि दोष अथवा राहु-केतु के नाम पर भय का वातावरण निर्मित कर देते हैं. इससे व्यक्ति के मन में यह धारणा बन जाती है कि उसका जीवन किसी अदृश्य संकट से घिरा हुआ है और उससे बचने का एकमात्र उपाय वही है जो परामर्शदाता बता रहा है. यह स्थिति न केवल शास्त्रविरुद्ध है, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी अत्यन्त चिंताजनक है.

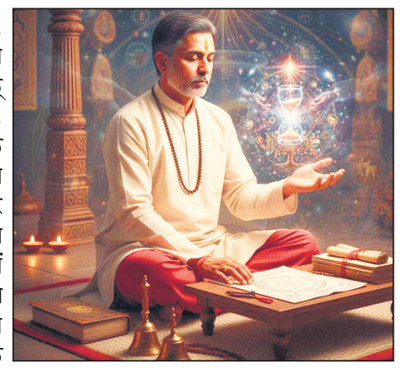

भारतीय दर्शन का मूल स्वर सदैव पुरुषार्थ का रहा है. भगवद्गीता का सम्पूर्ण संदेश मनुष्य को कर्म, विवेक और आत्मविश्वास की ओर प्रेरित करता है. यदि ज्योतिष किसी व्यक्ति को कर्मशील बनाने के स्थान पर भाग्यवाद, भय और मानसिक निर्भरता की ओर ले जाए, तो वह गीता की आत्मा के विपरीत हो जाता है. ग्रह संकेत अवश्य देते हैं, किन्तु वे मनुष्य के पुरुषार्थ का स्थान कभी नहीं लेते. ग्रह संभावनाओं का बोध कराते हैं, निर्णय नहीं सुनाते. यही कारण है कि प्राचीन आचार्यों ने फलादेश में संयम, विनम्रता तथा विवेक को सर्वोपरि माना है. आज आवश्यकता इस बात की है कि ज्योतिषी स्वयं को भविष्य का स्वामी नहीं, बल्कि संभावनाओं का विश्लेषक माने. किसी भी भविष्यवाणी का उद्देश्य व्यक्ति को भयभीत करना नहीं, बल्कि उसे आने वाली परिस्थितियों के प्रति सजग, धैर्यवान और मानसिक रूप से सक्षम बनाना होना चाहिए.उपनिषदों का अमर वाक्य— 'सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद:'—केवल सामान्य जीवन के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक विद्वान के लिए नैतिक आचार-संहिता है. यदि कोई ज्योतिषी सत्य से समझौता करता है, अध्ययन छोड़ देता है अथवा लोकमंगल के स्थान पर आर्थिक लाभ को प्राथमिकता देता है, तो वह अपने ज्ञान के मूल उद्देश्य से ही भटक जाता है.

प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत वर्षों तक अध्ययन, गणना, शास्त्रार्थ और व्यवहारिक अभ्यास के पश्चात् ही किसी व्यक्ति को ज्योतिष का अधिकारी माना जाता था. आज कुछ सप्ताह के ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कुछ लोकप्रिय वीडियो अथवा सामाजिक माध्यमों पर प्राप्त लोकप्रियता के आधार पर स्वयं को अंतरराष्ट्रीय ज्योतिषाचार्य घोषित कर देना अत्यन्त सरल हो गया है. यह सुविधा तकनीक की देन अवश्य है, परन्तु यही सुविधा ज्ञान की गुणवत्ता के लिए गंभीर चुनौती भी बन गई है. प्रसिद्धि कभी भी विद्वत्ता का प्रमाण नहीं हो सकती और अनुयायियों की संख्या किसी व्यक्ति की शास्त्रीय योग्यता निर्धारित नहीं करती.

आधुनिक संचार माध्यमों ने इस संकट को और अधिक जटिल बना दिया है. प्रतिदिन लाखों लोग ऐसे वीडियो देखते हैं जिनमें कुछ ही मिनटों में बारह राशियों के लिए एक समान भविष्यवाणी प्रस्तुत कर दी जाती है. 'आज से आपका भाग्य बदल जाएगा', 'सात दिनों में करोड़पति बनेंगे', 'यह उपाय न किया तो जीवन नष्ट हो जाएगा', 'अगले महीने मृत्यु योग है' जैसे शीर्षक दर्शकों को आकर्षित अवश्य करते हैं, किन्तु वे समाज में भय, भ्रम और अन्धविश्वास का विस्तार भी करते हैं. वैदिक ज्योतिष का आधार व्यक्तिगत जन्मकुण्डली, दशा, गोचर तथा व्यक्तिगत परिस्थितियाँ हैं; इसलिए सम्पूर्ण विश्व के करोड़ों लोगों के लिए एक समान भविष्यवाणी प्रस्तुत करना न तो शास्त्रीय दृष्टि से उचित है और न ही नैतिक दृष्टि से उत्तरदायी. मीडिया की प्रतिस्पर्धा में लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए यदि अतिशयोक्ति को माध्यम बनाया जाएगा तो अंतत: उसकी क्षति स्वयं ज्योतिष को ही उठानी पड़ेगी.मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक शोध यह सिद्ध कर चुके हैं कि भय बार-बार सुनने वाला व्यक्ति स्वयं अपनी क्षमताओं पर संदेह करने लगता है.

> भारतीय ज्ञान-परम्परा का मूल संदेश है कि विद्या का उद्देश्य मनुष्य को स्वतंत्र, विवेकशील, आत्मविश्वासी और उत्तरदायी बनाना है. यदि ज्योतिष किसी व्यक्ति को भयमुक्त होकर अपने पुरुषार्थ, नैतिक आचरण और आत्मबल के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देता है, तभी वह अपने वास्तविक स्वरूप में सार्थक है. ग्रह मनुष्य के भाग्य के स्वामी नहीं, बल्कि संभावनाओं के संकेतक हैं; अंतिम निर्णय सदैव मनुष्य के विवेक, कर्म, संस्कार और चरित्र से निर्मित होता है. इसलिए इक्कीसवीं शताब्दी का आदर्श ज्योतिषाचार्य वही होगा जो भविष्य का व्यापारी नहीं, बल्कि आशा का संवाहक, विवेक का मार्गदर्शक, नैतिकता का संरक्षक और समाज का उत्तरदायी परामर्शदाता बने. यही भारतीय ज्योतिष की शाश्वत आत्मा है, यही उसकी वैश्विक प्रासंगिकता है और यही वह मार्ग है जिसके माध्यम से यह प्राचीन ज्ञान-विज्ञान आने वाली पीढ़ियों के लिए भी विश्वसनीय, सम्मानित और लोकमंगलकारी बना रहेगा.

पूजा में घंटी बजाने के लाभ

सनातन धर्म में पूजा के दौरान घंटी या घड़ियाल बजाने की परंपरा सदियों पुरानी है. मंदिर हो या घर का पूजा स्थल, आरती और पूजन के समय घंटी की मधुर ध्वनि वातावरण को भक्तिमय बना देती है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार घंटी बजाना केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि पूजा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है. कहा जाता है कि इसकी ध्वनि से पूजा का शुभारंभ होता है और वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है.

शास्त्रों में माना गया है कि पूजा के समय घंटी बजाने से भगवान का ध्यान आकर्षित होता है और आराधना अधिक एकाग्रता के साथ संपन्न होती है. मान्यता है कि घंटी की पवित्र ध्वनि से आसपास का वातावरण शुद्ध होता है और नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है. इसी कारण मंदिरों में प्रवेश करते समय और आरती के दौरान घंटी बजाने की परंपरा निभाई जाती है.

धार्मिक दृष्टि से घंटी की ध्वनि को '?' के नाद का प्रतीक भी माना जाता है. ऐसी मान्यता है कि इसकी गूंज मन को शांत करती है और पूजा में ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है. यही कारण है कि घर के मंदिर में भी छोटी घंटी रखने और नियमित पूजा के समय उसे बजाने की परंपरा प्रचलित है

वास्तु शास्त्र में भी पूजा के समय घंटी या घड़ियाल की ध्वनि को शुभ माना गया है. मान्यता है कि नियमित रूप से पूजा के समय घंटी बजाने से घर का वातावरण सकारात्मक बना रहता है और परिवार में सुख-शांति का संचार होता है. हालांकि, यह भी कहा जाता है कि घंटी केवल पूजा या आरती के समय ही बजानी चाहिए और अनावश्यक रूप से बार-बार नहीं बजानी चाहिए.

> घंटी या घड़ियाल बजाना केवल धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा नहीं, बल्कि श्रद्धा, अनुशासन और ईश्वर के प्रति समर्पण का प्रतीक भी माना जाता है. भक्तों का विश्वास है कि श्रद्धा और भक्ति के साथ की गई पूजा तथा घंटी की मधुर ध्वनि मन में आध्यात्मिक ऊर्जा और सकारात्मक भाव उत्पन्न करती है.

देवशयनी एकादशी

कब है चातुर्मास की शुरुआत जानिए महत्व

हिंदू धर्म में देवशयनी एकादशी का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है. आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाने वाला यह पावन व्रत भगवान विष्णु को समर्पित है और इसी दिन से चातुर्मास का शुभारंभ होता है. धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु क्षीरसागर में योगनिद्रा में चले जाते हैं और चार महीने बाद प्रबोधिनी (देवउठनी) एकादशी पर जागृत होते हैं. इस अवधि में जप, तप, दान, व्रत, भजन और आत्मिक साधना का विशेष महत्व बताया गया है.

वर्ष 2026 में देवशयनी एकादशी 25 जुलाई, शनिवार को मनाई जाएगी. पंचांग के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी तिथि 24 जुलाई 2026 को शाम 6:12 बजे प्रारंभ होगी और 25 जुलाई 2026 को रात 8:10 बजे समाप्त होगी. उदया तिथि के अनुसार व्रत 25 जुलाई को रखा जाएगा. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार देवशयनी एकादशी को हरिशयनी या पद्मा एकादशी भी कहा जाता है. मान्यता है कि इस व्रत के प्रभाव से व्यक्ति के पापों का क्षय होता है, आरोग्य, सुख-समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है. कहा जाता है कि इस दिन श्रद्धापूर्वक भगवान विष्णु की पूजा, उपवास, रात्रि जागरण और विष्णु मंत्रों का जाप करने से विशेष पुण्य फल मिलता है. भगवान श्रीकृष्ण ने भी इस एकादशी को सर्वश्रेष्ठ व्रतों में स्थान देते हुए इसके पालन से मोक्ष और परम गति की प्राप्ति का वर्णन किया है.देवशयनी एकादशी से आरंभ होने वाला चातुर्मास संयम, साधना और सात्विक जीवन का काल माना जाता है.

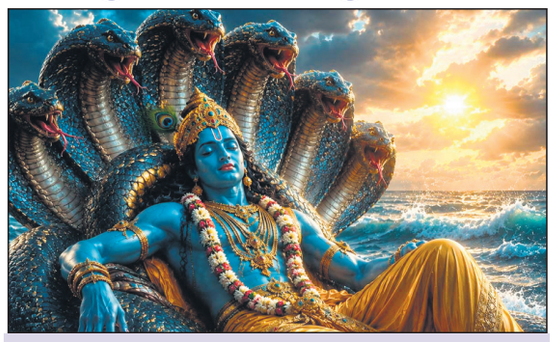

> इस दौरान ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि या साधारण बिस्तर पर शयन, दीपदान, जप-तप तथा सात्विक आहार अपनाने की परंपरा है. साथ ही विभिन्न महीनों में कुछ खाद्य पदार्थों के त्याग का भी उल्लेख मिलता है. श्रद्धालु इस दिन प्रात: स्नान के बाद भगवान विष्णु का पूजन कर व्रत का संकल्प लेते हैं और दिनभर उपवास रखकर भजन-कीर्तन एवं विष्णु सहस्रनाम का पाठ करते हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्रद्धा और नियमपूर्वक किया गया यह व्रत जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और आध्यात्मिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है.

जानिए माथे पर चंदन लगाने का महत्व

सनातन परंपरा में माथे पर चंदन का तिलक लगाना केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि इसे शुभता, शांति और सकारात्मक ऊर्जा से भी जोड़ा जाता है. मंदिर दर्शन, पूजा-पाठ, यज्ञ, व्रत और मांगलिक कार्यों के दौरान चंदन का तिलक लगाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है. धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार माथे पर चंदन लगाने से मन एकाग्र होता है, मानसिक शांति मिलती है और व्यक्ति के भीतर सकारात्मक विचारों का संचार होता है.

ज्योतिष शास्त्र में चंदन का संबंध मुख्य रूप से गुरु (बृहस्पति) और चंद्र ग्रह से माना जाता है. मान्यता है कि नियमित रूप से चंदन का तिलक लगाने से गुरु ग्रह की शुभता बढ़ती है, जिससे ज्ञान, विवेक, सम्मान और सौभाग्य में वृद्धि होती है. वहीं चंद्रमा मन का कारक ग्रह माना गया है, इसलिए चंदन की शीतल प्रकृति मानसिक तनाव को कम करने और मन को शांत रखने का प्रतीक मानी जाती है. धार्मिक दृष्टि से दोनों भौंहों के बीच का स्थान आज्ञा चक्र माना जाता है. मान्यता है कि इस स्थान पर चंदन का तिलक लगाने से आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है और पूजा-पाठ के दौरान मन अधिक एकाग्र रहता है. इसी कारण अधिकांश धार्मिक अनुष्ठानों में चंदन का तिलक विशेष रूप से लगाया जाता है. पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार पूजा के बाद भगवान को अर्पित चंदन का तिलक लगाने से ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है तथा नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा होती है. कई लोग विशेष अवसरों पर केसर मिश्रित चंदन या सफेद चंदन का तिलक भी लगाते हैं, जिसे शुभ और मंगलकारी माना जाता है.

पूजा के बाद प्रसाद पहले किसे देना चाहिए

जानिए धार्मिक मान्यता और परंपरा

सनातन धर्म में पूजा-पाठ के बाद प्रसाद वितरण का विशेष महत्व माना जाता है. प्रसाद को केवल भोजन नहीं, बल्कि भगवान का आशीर्वाद और कृपा का प्रतीक माना जाता है. इसलिए इसे ग्रहण करने और वितरित करने से जुड़े कुछ धार्मिक नियम और पारंपरिक मान्यताएं भी प्रचलित हैं. अक्सर लोगों के मन में यह प्रश्न रहता है कि पूजा के बाद प्रसाद सबसे पहले किसे देना चाहिए. शास्त्रीय परंपराओं के अनुसार इसका उत्तर पूजा के प्रकार और अवसर पर निर्भर करता है, लेकिन कुछ सामान्य मान्यताएं व्यापक रूप से अपनाई जाती हैं.

धार्मिक मान्यता के अनुसार सबसे पहले भगवान को विधिवत भोग अर्पित किया जाता है. इसके बाद प्रसाद को ईश्वर का आशीर्वाद मानते हुए श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया जाता है. कई परंपराओं में पूजा के बाद सबसे पहले घर के बड़े-बुजुर्ग, गुरु या संत स्वरूप व्यक्ति को प्रसाद देने की परंपरा है. यदि परिवार में माता-पिता या बुजुर्ग मौजूद हों तो उन्हें सम्मानपूर्वक प्रसाद देना शुभ माना जाता है.

इसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों, बच्चों और उपस्थित श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरित किया जाता है. कई स्थानों पर गाय को प्रसाद का एक अंश या पहली रोटी अर्पित करने तथा पक्षियों और अन्य जीवों के लिए भी अन्न निकालने की परंपरा है, जिसे दया और सेवा का प्रतीक माना जाता है. धार्मिक मान्यता यह भी है कि प्रसाद को कभी भी अपवित्र स्थान पर नहीं रखना चाहिए और न ही उसका अनादर करना चाहिए. प्रसाद उतना ही लेना चाहिए जितना श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया जा सके. यदि अधिक प्रसाद बच जाए तो उसे अन्य लोगों में बांटना या जरूरतमंदों को देना पुण्यकारी माना जाता है.

सोते समय किस दिशा में रखें सिर

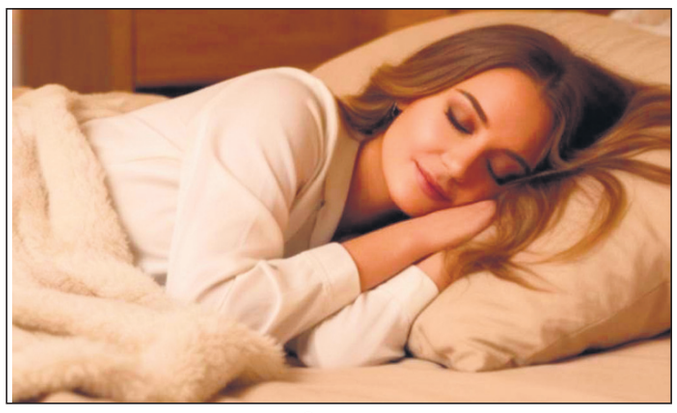

जानिए ज्योतिष और वास्तु के अनुसार सही दिशा और उसके लाभ

वास्तु शास्त्र और ज्योतिष में सोने की दिशा का विशेष महत्व बताया गया है. मान्यता है कि सही दिशा में सिर रखकर सोने से मानसिक शांति, अच्छी नींद, सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य लाभ मिलता है, जबकि गलत दिशा में सोने से तनाव, अनिद्रा, थकान और नकारात्मकता बढ़ सकती है. इसलिए घर में बिस्तर की दिशा तय करते समय वास्तु के नियमों का ध्यान रखना शुभ माना जाता है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार दक्षिण दिशा में सिर रखकर सोना सबसे उत्तम माना जाता है. यह दिशा स्थिरता, अच्छी सेहत और लंबी आयु का प्रतीक मानी जाती है. वहीं पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने से ज्ञान, स्मरण शक्ति और सकारात्मक सोच में वृद्धि होने की मान्यता है. विद्यार्थियों और अध्ययन करने वालों के लिए यह दिशा विशेष रूप से लाभकारी मानी जाती है.

इसके विपरीत उत्तर दिशा में सिर रखकर सोने से बचने की सलाह दी जाती है.

वास्तु मान्यताओं के अनुसार इससे मानसिक अशांति, बेचैनी और नींद संबंधी समस्याएं हो सकती हैं. इसी तरह पश्चिम दिशा में सिर रखकर सोना सामान्य माना जाता है, हालांकि इसे दक्षिण और पूर्व की तुलना में कम शुभ माना गया है.

> ज्योतिषाचार्यों का मानना है कि यदि व्यक्ति नियमित रूप से सही दिशा में सोए और सोने से पहले ईश्वर का स्मरण करे, तो मन शांत रहता है और दिनभर की नकारात्मकता कम होती है. साथ ही शयनकक्ष में अनावश्यक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की संख्या कम रखना, साफ-सफाई बनाए रखना और सकारात्मक वातावरण रखना भी लाभकारी माना जाता है.

राशिफल

दिनांक- 19 से 25 जुलाई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में, मंगल वृषभ राशि में, वक्री बुध मिथुन राशि में ता. 24 को 1.36 दिन से मार्गी, गुरू कर्क राशि में, शुक्र सिंह राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा सिंह कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 24 को मार्गी बुध के प्रभाव से अनाजों में मंदी आती है. गुरू शुक्र की युति कर्क राशि में बड़ी तेजी की लहर लायेगी, परन्तु बीच-बीच में मंदी के रियेक्शन भी आते हैं, सभी तरह के तेलों में मंदी का रियेक्शन आयेगा. भारी तेजी के बाद व्यापारी बचत करेगें. सोयाबीन और सूरजमुखी में गिरावट, अरण्ड और सरसों में स्थिरता रहेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

मंगलवार	21 जुलाई को	वैवस्वत पूजा, ताप्ती जयंती,
बुधवार	22 जुलाई को	भडरिया नवमीं, भडली नवमी, गुप्त नवरात्र नवमीं,
शुक्रवार	24 जुलाई को	आशा दशमीं,
शनिवार	25 जुलाई को	हरिशयनी देवशयनी एकादशी व्रत, चार्तुमास प्रारम्भ, पंढरपुर मेला,

मेष

आपको अपने कार्य के तरीकों में थोड़ा परिवर्तन करना होगा, अधिकारी व सहकर्मी आपकी तारीफ करेंगे, बढ़ते हुये खर्चो को पूरा करने के लिये आय के नये स्त्रोत ढूंढने का प्रयास करेंगे, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, व्यवसायिक क्षेत्र में सहयोगियों के साथ चतुराई से कार्य करें, आपको गुप्त शत्रुओं से सदैव सतर्कता रखना हितकर रहेगा.

वृषभ

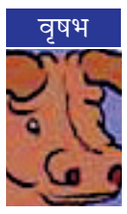

इस सप्ताह आप जो कुछ भी करेंगे, वह सफल होगा, पुरानी योजना को नई दिशा देकर लाभ कमा सकते हैं, आपको फिर से अपनी प्राथमिकताएं तय करनी पड़ सकती हैं, स्वास्थ्य पर ध्यान दें, आप ज्यादा खुश रहने की कोशिश करेंगे, गुप्त शत्रुओं से परेशानी हो सकती है, विपरीत परिस्थितियों में आपके करीबी रिश्तेदार आपकी मदद करेंगे,

मिथुन

नये जोश व उत्साह का समय है, कामकाज में आशा से अधिक लाभ एवं सफलता मिलेगी, कारोबार में नये संगठन लाभदायक हो सकते हैं, नौकरी में तरक्की होगी, कोई पुराना व्यक्ति अचानक आपसे मुलाकात करेगा, सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे, कोई वैवाहिक कार्य जो काफी समय से रूका है, इस सप्ताह अंतिम रूप धारण कर सकता है.

कर्क

परिवार एवं राजकीय कार्य के सिलसिले में यात्रा होगी, भावनात्मक संबंधों में मधुरता रहेगी, किसी पुराने मामले के उजागर होने से विवाद की संभावना है, स्वास्थ्य के साथ साथ आर्थिक स्थिति सुधरेगी, नया कार्य शुरू करने के लिये फिलहाल समय ठीक नहीं है, समय का ध्यान रखें, घरेलू मामलों में पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी और लाभकारी रहेगी.

सिंह

कामकाज में सुधार के लिये थोड़ी जोखिम उठानी पड़ सकती है, आपका सारा ध्यान कामकाज को जल्दी निपटाने का रहेगा, लोगों से मिलकर उनसे सीखने और अपनी कमजोरी दूर करने का प्रयास करें, परिवार के प्रति आपका सहयोगात्मक रूख रहेगा, भौतिक सुख साधनों की वृद्धि होगी, तकनीकी क्षेत्र में अच्छे अवसर मिलेंगे.

कन्या

लंबे समय से चले आ रहे अधूरे कार्य पूरे हो सकते हैं, कामकाज में बेहतर सफलता मिलेगी, आपका सारा ध्यान बच्चों की पढाई और केरियर में रहेगा, आपके सहकर्मियों का रवैया आपके लिये अच्छा रहेगा, प्रणय संबंधों में मधुरता आयेगी, दूर दराज की यात्रा और निवेश का योग बन सकता है, नये वाहन खरीदने की संभावना है.

तुला

धन संबंधी मामलों में सावधानी रखें, दौड़धूप करने से अनुकूल सफलता मिलेगी, भावुकता में फैसला लेने से बचें, धार्मिक यात्रा होगी, आंख मूंदकर दूसरों की बात न मानें, सप्ताह के मध्य प्रभावशाली व्यक्तियों से भेंट होगी, जो आपको महत्वपूर्ण मामलों में उचित सलाह दे सकते हैं, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, स्थायी संपत्ति में लाभ का योग है.

वृश्चिक

स्वास्थ्य को लेकर छोटी मोटी परेशानी हो सकती है, धीरे धीरे सुधार होगा, कामकाज की अधिकता से आप घर के कार्यो पर ध्यान नहीं दे सकेंगे, नये अनुबंधों पर हस्ताक्षर करने के पूर्व एक बार पुन: विचार कर लें, कानूनी मामलों में सावधानी रखें, दायित्वों में वृद्धि होगी, यात्रा प्रवास में उठाईगीरों से नुकसान हो सकता है, भूमि भवन पर खर्च होगा.

धनु

व्यवसायिक स्तर पर आप व्यस्त रहेंगे, व्यक्तिगत संबंध सुधारने पर बल देंगे, अपनी बचत को लेकर विचार विमर्श करेंगे, विरोधी वर्ग शांत रहेगा, परिवार में अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ सकता है, सामाजिक कार्यो में आप मित्रों के साथ सम्मिलित हो सकते हैं, राजनेताओं को सफलता प्राप्त करने के लिये सावधानी पूर्वक अपनी योजना बनानी चाहिये.

मकर

अभी आपका समय तनावपूर्ण रह सकता है, कार्य करने में अड़चनों का सामना करना पड़ेगा, समस्या का हल होगा, सप्ताह के मध्य कामकाज को सीमित रखें, प्रयास और परिश्रम पर ध्यान दें, सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा, प्रसिद्धि मिल सकती है, नये समझौते सहायक होंगे, सप्ताह के उत्तरार्ध में नई कार्य योजना शुरू करने से बचें.

कुम्भ

आत्म विश्वास बढ़ेगा, फिर भी वित्तीय मामलों मं आप काफी सोच समझकर निर्णय लें, अन्यथा परेशानी होगी, निर्णय लेने से पहिले सोच विार अवश्य करें, संतान पक्ष के लिये समय अनुकूल है, हर मसले पर पारिवारिक दृष्टिकोण से विचार करें, सप्ताह का उत्तरार्ध आमोद प्रमोद का रहेगा, जमीन जायजाद के मामलों में तनाव हो सकता है.

मीन

लंबे संघर्ष के बाद आप सफलता व अपनी पहचान बनाने में कामयाब होंगे, सार्थक संबंध और संवाद आपको सफलता दिलायेगा, चुनौतियों का मुकाबला होगा, किसी नई कार्य योजना को शुरू करने से बचें, किसी मित्र के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, सप्ताह के अन्त में नियोजित कार्यक्रम अचानक परिवर्तन हो सकता है.